GEOGRAPHY

Page No.: 01
Date: / /

* (Q.) Explain the Problems and Prospects of agriculture in Peninsular India.
प्रायद्वीपीय भारत में कृषि की समस्याओं एवं सम्भावनाओं की व्याख्या कीजिए।

Ans => भारत मुख्यतः एक एक कृषि प्रधान देश है जिसमें लोगों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में कृषि की प्रमुख भूमिका है। सत्ताधारी दल का भविष्य और सरकार की सफलता कृषि उत्पादन की मात्रा और जन भविष्य और सरकार की सफलता कृषि उत्पादन की मात्रा और जन साधारण के लिए सस्ते दाम पर खाद्यान्नों की उपलब्धता पर निर्भर करती है। भारतीय कृषि निर्वाहक किस्म की है। भारतीय कृषि पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव है। यहाँ के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 54% भाग पर कृषि कार्य किया जाता है। इसमें सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक प्रथाओं, भूधारिता, भूस्वामित्व आदि को सम्मिलित किया जाता है। इनका प्रभाव खेतों के आकार उनके प्रतिरूप कृषि प्रकार, शस्य भूमि उपयोग, शस्य उत्पादकता आदि पर देखा जाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है परन्तु पश्चिम के विकसित देशों की तुलना में यह पिछड़ी हुई है और पारंपरिक है। कृषि उत्पादिता कम है और किसानों की आर्थिक हालत चिंतनीय है। औद्योगिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्रों के तुलना में कृषि क्षेत्र में

2020-7-21 16:

निवेश कम है और नवीनीकरण की गति मन्थर है इसलिए

कृषि समस्याओं का निम्न प्रकार से उल्लेख किया जा रहा है जिनसे देश में कृषि विकास बाधित हो रहा है।

(1) भू जोतो का अनार्थिक आकार एवं उनका विखण्डन :— भू जोतों का आकार बहुत छोटा है और आर्थिक दृष्टि से व्यवहार्य नही है जनसंख्या का तीव्र वृद्धि एवं उत्तराधिकारी की व्यवस्था जो है उसे कृषि क्षेत्र झेल रही है भूजोतो की राष्ट्रीय आकार से भी छोटा है तमिलनाडु, केरल में जब तक भूजोतो को आर्थिक दृष्टि से लाभकारी नही बनाया जाता है तब तक कृषि विकास और गरीबी उन्मूलन का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन होगा। इस क्षेत्र से इतनी आय नही प्राप्त होती पाती है कि किसान कृषि में भारी निवेश कर सके। लघु आकार और विखण्डन के कारण इनमें आधुनिक कृषि मशीनों का इस्तेमाल कठिन हो जाता है। कृषि विशेषज्ञो के अनुसार पंजाब में हरित क्रांति की सफलता का एक कारण वहाँ भूजोतो का बड़ा आकार में होना है।

देश में जमींदारी उन्मूलन हो चुका है परन्तु उसके दुष्प्रभाव अभी भी बनी है। देश में बहुत बड़े संख्या में भूमिहीन कृषक पाये जाते है जो खेत का मालिक नही है मगर काश्त करते है दूसरी तरफ अनुपस्थित

भूस्वामी पट्टे या बटाई पर खेती कराते हैं और कृषि सुधार में बहुत कम रुचि लेते।

प्रायद्वीपीय भारत में जोतों का औसत आकार

राज्य	वर्ष 1970-71	2000-01
राजस्थान	5.46	3.65
महाराष्ट्र	4.28	1.66
गुजरात	4.11	2.33
मध्य प्रदेश	4.00	2.22
कर्नाटक	3.20	1.74
आंध्र प्रदेश	2.51	1.25
उड़ीसा	1.89	~~0.88~~ 1.25
तमिलनाडु	1.45	0.89
पश्चिम बंगाल	1.20	0.82
केरल	0.51	0.24
भारत	2.28	1.33

प्रायद्वीपीय भारत के राज्यों का कृषि जोत का औसत आकार हेक्टेयर में दिया गया है जो 1970-71 से 2000-01 में कितना तेजी से परिवर्तन हो रहा है इसे दिखाया गया है।

(2) ⇒ <u>कृषकों की गरीबी एवं कर्जदारी :-</u>

यद्यपि कर्जदारी निर्वाहन कृषि की सर्वव्यापी विशेषता है परंतु भारत में इसका प्रभाव बहुत दुखदायी है वह अन्यत्र नहीं देखा जाता है। ऑल इंडिया रूरल क्रेडिट सर्वे के 1954-56

के एक अनुमान के अनुसार भारत के लगभग 70% काश्तकारी कर्ज में है। नए आंकड़ों के अनुसार भारतीय किसानों की गरीबी का संकेत मिलता है। एक अनुमान के अनुसार भारतीय किसान की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय का औसत लगभग 2000 रुपया है यद्यपि सरकारी सहकारी समितियों से किसानों को कम ब्याज दर पर ऋण की सुविधा दी जा रही है परंतु इसका प्रभाव मझले और बड़े किसानों तक ही सीमित है बड़ी संख्या में छोटे संस्था किसान अभी भी व्यावसायिक ऋणदाताओं को भारी ब्याज पर कर्ज लेता है और धीरे-धीरे अपनी समूची भू-सम्पति साहूकार / ऋणदाता को सौंपकर कंगाल बन जाते थे। कम आय होने के कारण ही किसानों के लिए नई खेती हेतु निवेश करना कठिन होता है तथा कृषि में समुचित नवीनीकरण और विकास ~~की नई~~ नहीं हो पा रहा है।

अधिकांश कृषक अभी भी अशिक्षित और कम पढ़े-लिखे हैं जिन्हें सरकारी योजनाओं और नीतियों के बारे में बहुत कम जानकारी होती है। इसी कारण कृषि विकास कार्यक्रमों में जन साधारण की भागीदारी बहुत कम होती है। सरकार द्वारा दी गई सब्सिडी और ऋणों का या तो समुचित उपयोग नहीं हो पाती है अथवा वे गलत हाथों में चले जाते हैं।

2020-7-21 16:09

(3) => कृषि आदानों की कमी :- एक तरफ जहाँ किसान कृषि नवाचारों को अपनाने में कम रुचि दिखाते हैं वहीं दूसरी तरफ रासायनिक उर्वरक अधिक अपजदायी उन्नत बीज, कीटनाशी, कृषि मशीनों आदि या तो समुचित मात्रा में उपलब्ध नहीं है अथवा उनकी कीमतें किसानों के सामर्थ्य के बाहर है। गुणवत्ता नियंत्रण के अभाव में इनमें ठगी की संभावना बनी रहती है। 1997-98 में 76 मिलियन हेक्टेयर भूमि पर 78.29 लाख क्विंटल उन्नत बीजों का उपयोग किया गया जो सम्पूर्ण कृषि क्षेत्र का केवल 40% था। वर्ष 2003-04 में रासायनिक उर्वरकों के कुल 167.98 लाख टन उपयोग के तुलना में आंतरिक उत्पादन 142.62 लाख टन रहा। इससे प्रति हेक्टेयर कृषि क्षेत्र पर उर्वरकों का औसत 0.088 टन आता है जो कृषि उपज बढ़ाने के लिए अपर्याप्त है 58.6% क्षेत्र सिंचाई के लिए वर्षा पर आश्रित है कीटनाशक वृहत्त पैमाना पर कृषि फसल को नष्ट कर देता है प्रतिवर्ष कृषि उत्पादन का लगभग 10% भाग नष्ट हो जाती है

(4) => बुनियादी सुविधाओं का अभाव :-

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात और परिवहन की सुविधाओं की भारी कमी है अधिकांश ग्रामीण सड़कें कच्ची है इन पर बैलगाड़ी भी मुश्किल से बरसात में चल पाती है। ग्रामीण क्षेत्र में 1500 लोगों वाले गाँव

2020-7-21 16:10

को पक्की सड़क से जोड़ने की योजना प्रारम्भ है। बैंक की सुविधाएँ केवल कस्बों और नगरीय क्षेत्रों तक ही सीमित हैं। महाराष्ट्र, गुजरात एवं आंध्र प्रदेश के अपेक्षा सभी राज्यों में विपणन सुविधाओं की कमी है। नियमित बाजारों की संख्या सीमित है। समुचित मूल्य नीति के अभाव में किसानों को उनकी उपज का समुचित मूल्य नहीं मिल पाता है।

(5) निम्न उत्पादकता:- भारतीय कृषि की एक मुख्य समस्या इसकी निम्न उत्पादकता से संबंध है। भारतीय कृषि आज अन्य देशों के तुलना में कम है। विश्व की प्रति हेक्टेयर गेहूं की उपज की औसत भारत से 30% अधिक है। मक्का 140% ज्वार - बाजरा का 80% और कपास 25% अधिक होता है।

चुनी फसलों की औसत उपज आज (कि.ग्रा./हे.) (Kg/ha)

फसलें	भारत 2007-08	संयुक्त राज्य	चीन	जापान	पूर्व सोवियत संघ
चावल	2202	6490	5728	3662	4242
गेहूँ	2802	2560	3179	-	1894
ज्वार	1021	4249	-	-	1003
गन्ना(टन)	69	80	60	-	-
कपास	467	1624	-	-	1700
जूट	2260	-	-	-	-
मूंगफली	1459	2870	2117	1918	2143

=> प्रायद्वीपीय भारत में प्रति हेक्टेयर उत्पादन किग्रा० (2006-07)

राज्य	गेहूँ	चावल	ज्वार	बाजरा	मक्का	कपास
गुजरात	2958	1894	831	1088	698	625
कर्नाटक	762	2470	925	483	2829	276
मध्यप्रदेश	1835	824	1035	1366	976	220

2020-7-21 16:

राज्य	गेहूँ	चावल	ज्वार	बाजरा	मक्का	कपास
महाराष्ट्र	1325	1680	817	729	1983	253
राजस्थान	2721	–	556	701	1086	363
आँध्र प्रदेश	–	2984	972	770	3396	381
झारखंड	–	1828	–	–	1228	–
तमिलनाडु	–	–	–	–	3833	374
भारत	2708	2133	844	866	1912	421

स्रोत - Statistical Abstract India 2007

(6) कृषि शोध, शिक्षा एवं प्रशिक्षण सुविधाओं का अभाव:- भारत में कृषि शोध अभी भी अपनी शैशवावस्था में है साथ ही यहाँ प्रयोगशाला एवं खेत के बीच समुचित संबंध का अभाव है जिससे शोध के लाभ सामान्य किसान तक नहीं पहुँच पाते हैं। कृषकों को नयी कृषि तकनीकों को अपनाने, कृषि उत्पादन बढ़ाने, कृषि को लाभकारी एवं पोषणीय बनाने हेतु प्रेरित करने पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है।

(6) मृदा अपरदन एवं मृदा अवक्रमण:- मृदा अपरदन से न केवल मृदा की उर्वरता में कमी आ रही है इससे मूल्यवान शस्य क्षेत्र बंजर में परिणत होता जा रहा है भारत में लगभग 80 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र बीहड़ एवं खड्डों के रूप में बेकार हैं। वनों का अंधाधुन कटाई पशुओं की बेरोक टोक चराई, त्रुटिपूर्ण भूमि उपयोग पद्धतियों से मृदा अपरदन और मृदा अवक्रमण को बढ़ावा मिला है। देश में 1953 से मृदा संरक्षण के कार्यक्रम शुरू किए गए हैं परन्तु इसके परिणाम बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं हैं।

2020-7-21 16:1

(7) सिंचाई :- शुद्ध बोए गये क्षेत्र के संदर्भ में शुद्ध सिंचित क्षेत्र के प्रतिशत को सिंचन गहनता कहते है गोदावरी, कृष्णा, कैला, कोवीपुरम और नागपट्टनम में सिंचाई गहनता 60% से अधिक है राजस्थान, मध्य एशिया भारत में सिंचन गहनता का प्रतिशत 5% से कम पाया जाता है

(8) बृहत और मध्यम सिंचाई :- 10,000 हेक्टेयर से अधिक संवर्ध्य कमान क्षेत्र वाली सिंचाई परियोजनाओ को वृहत तथा 2000 से 10000 हेक्टेयर क्षेत्र को मध्यम कहा जाता है।

(9)⇒ लघु सिंचाई :- इसके अंतर्गत उन पृथक सिंचाई परियोजनाओं को सम्मलित किया जाता है जिनका संवर्ध्य कमान क्षेत्र 2000 हेक्टेयर से कम होता है। इसमें कुआँ, निजी नलकूपों, सरकारी नलकूपों एवं लिफ्ट सिंचाई आदि को समाहित किया जाता है।

(10) सिंचाई का स्त्रोत :- सतही एवं भौम जल की उपलब्धता, उच्चावच संरचना, मिट्टी और जलवायु दशाओं में भिन्नता के कारण देश में कई सिंचाई साधनों का प्रयोग किया जाता है यह निम्न-लिखित साधन है

→ तालाब :- तालाबों द्वारा सिंचाई दक्षिणी प्रायद्वीप के पूर्वी भाग में अधिक लोकप्रिय है। यहाँ कठोर, ऊबड़-खाबड़ निचली पठारी भागों में मौसमी नदियों को बाँध कर तालाब बना लिया जाता है। तमिलनाडु में तालाबों से सिंचाई महत्वपूर्ण है।

⇒ प्रायद्वीपीय भारत में सिंचाई क्षेत्र 2005-06 (% में)

राज्य	नहर	तालाब	कुआँ नलकूप	शुद्ध कृषि क्षेत्र %
आंध्र प्रदेश	35.79	15.07	45.22	40.87
छत्तीसगढ़	70.19	4.25	19.31	26.20
गुजरात	17.71	0.77	80.79	34.39
कर्नाटक	35.52	6.40	45.49	28.26
केरल	27.18	11.22	30.92	18.81
मध्यप्रदेश	18.11	2.36	65.06	37.95
महाराष्ट्र	30.70	–	69.30	18.86
उड़ीसा	–	–	–	32.17
राजस्थान	27.11	1.22	70.34	37.38
तमिलनाडु	27.43	19.69	52.60	55.68
भारत	25.71	3.38	58.76	42.42

स्रोत - Statistical Abstract india - 2007

2020-7-21